विचार बिन्दु

त्रुटियों के संशोधन का नाम ही उन्नति है। –लाला लाजपत रॉय

मौसमी बीमारियों के फैलाव का संकट

मानसून की विदाई के साथ-साथ अब मौसमी बीमारियों का दौर की शुरुआत होने लगी है। इस बार समूचे प्रदेश में मानसून की अच्छी बरसात हुई है। यहां तक अनके स्थानों पर तो बाढ जैसे हालात बने वहीं जलभराव की समस्या से लगभग समूचे प्रदेश को दो चार होना पडा। खैर यह विषयांतर होगा पर यह साफ है कि पानी के भराव के कारण अब तेजी से मच्छरों का प्रकोप फैलेगा और इसके चलते मच्छरों के कारण तेजी से वायरल बुखार-खासी और इससे जुडी बीमारियों में तेजी आयेगी। ऐसे में आम नागरिकों के साथ ही मेडिकल विभाग को चाकचोबंद होने के साथ ही स्थानीय निकाय संस्थाओं को अभी से अधिक सक्रिय होना होगा। मच्छरों का प्रकोप बरसात से जमा पानी और गंदगी के कारण अधिक होता है। ऐसे में साफ-सफाई और गंदगी जमा नहीं होने देने के काम में निकाय संस्थाओं को अधिक सजगता से कार्य करना होगा वहीं मच्छरों को पनपने से रोकने के लिए फोगिंग व मच्छर नाशक कीटनाकों का छिडकाव की तत्काल तैयारी करनी होगी। आमनागरिकों को भी आसपास पानी जमा नहीं होने देना होगा। इसके अलावा कूलर व घर के कवाड पुराने टायर आदि में पानी जमा नहीं होने देना होगा। सामान्य वाइरल से लेकर डेंगू और चिकनगुनिया जैसी मच्छर जनित बीमारियां तेजी से फैलेगी और अस्पतालों में बीमारों की लंबी लंबी कतार देखने को मिलेगी। ऐसे में स्वास्थ्य विभाग को भी वर्षा और मच्छर जनित बीमारियों के ईलाज और रोकथाम के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करनी होगी। खासतौर से दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी ताकि व्यवस्थाओं पर प्रश्न नहीं लगे और लोगों को त्वरित ईलाज सुविधा प्राप्त हो सके।

वैसे भी विश्व स्वास्थ्य संगठन की माने तो चिकनगुनिया अब विकराल रुप लेता जा रहा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार आने वाले समय में पांच अरब लोगों के इसके दायरें में आने की पूरी-पूरी संभावना है। हांलाकि चिकनगुनिया से मौत का आंकडा प्रभावितों में से केवल एक प्रतिशत है पर जिस तरह से इसके फैलने की संभावनाएं बनती जा रही है निश्चित रुप से मौत का आंकडा भी बढेगा और लाख दावों के बावजूद इसके स्वास्थ्य पर दूरगामी गंभीर प्रभाव भी पडेगा। चिकनगुनिया की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि उष्णकटिबंधीय अफ्रीका से एशिया को लपेटे में लेने वाली यह बीमारी अब योरोप को भी अपनी जद में करीब-करीब ले चुकी है। दरअसल जलवायु परिवर्तन भी इसके फैलाव में सहायक है। तापमान बढोतरी और नमी दोनों के कारण चिकनगुनिया का मच्छर फैलता है। जहां पानी जमा हुआ इसके मच्छर को डेरा जमाने का अवसर मिल जाता है। दुनिया के 119 देशों में चिकनगुनिया अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। हमारे देश में तो पिछले कुछ वर्षों से चिकनगुनिया लगातार अपनी उपस्थिति दर्ज करा ही रहा है। यदि हमारे देश भारत की बात करें तो गत वर्ष चिकनगुनिया के दो लाख संदिग्ध मामलें सामने आये थे जिनमें से 17 हजार से अधिक मामलों में चिकनगुनिया की पुष्टि हुई थीं। भले ही यह संख्या कम लग रही हो पर जिस तरह से चिकनगुनिया हमारे देश सहित दुनिया के देशों में पांव पसार रहा है यही विश्व स्वास्थ्य संगठन की चिंता का प्रमुख कारण है।

पुराने कबाड़, कूलरों व अन्य पानी जमा भले ही नाममात्र का ही जमा नहीं होने दे। इसी तरह से शरीर को ढंकने वाले कपड़े जैसे पूरी बाहों के शर्ट, पेंट आदि पहने और इसके साथ ही मच्छर नाशकों का उपयोग कर मच्छरों के प्रकोप से बचने और मच्छरों को फैलने से रोके। इस तरह के सुरक्षा मानकों की पालना करनी ही होगीं।

चिकनगुनिया मच्छर जनीत बीमारी है और पिछले कुछ सालों खासतौर से जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरुप मच्छर जनीत रोगों अधिक फैलाव हुआ है और पहले बरसात के पानी जमा होने के कारण फैलने वाली यह बीमारी अब गर्मी के मौसम बल्कि यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी छट-बारह महीने अपना असर दिखाने लगी है। इस साल हमारे यहां मानसून ने समय से पूर्व प्रवेश किया है और राजस्थान ही नहीं अपितु देश के अधिकांश हिस्सों में अच्छी बरसात हो रही हैं। जिस तरह की हमारी ड्रेनेज व्यवस्था है और जिस तरह से जल भराव के हालात हो रहे हैं उससे चिकनगुनिया का प्रकोप व्यापक रुप से देखने को मिल सकता है। अल्फाविषाणु परिवार के इस सदस्य एडिस के लार्वा के फैलाव को रोकने के लिए फोगिंग की प्रभावी व्यवस्था तो अभी दिखाई नहीं देती। फिर पानी का जमाब, गंदगी और बातावरण की नमी व लगातार बरसात के चलते मच्छरों का प्रकोप बढेगा ही, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। दरअसल हम आपदा से निपटने के लिए पहले से तैयार रहते ही नहीं है। इसके साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर तो पानी का भराव, किचड, गंदगी आदि तो है ही इसके साथ ही हमारी प्रवृति के अनुसार हम स्वयं मच्छर जनित बीमारियों को फैलने से रोकने के स्थान पर उसके फैलाव में सहभागी बन जाते हैं। घरों में पानी जमा होना और कबाड में पानी भरा रहना, कूलरों में पानी को समय से नहीं बदलना आदि ऐसे कारण है जिससे एडीज एजिटी और एडीज एल्बोपिक्टस को पनपने में पूरा सहयोग मिलता है। विशेषज्ञों के अनुसार सुबह सुबह और दोपहर में यह अधिक सक्रिय रहता है।

बरसात व उसके बाद आवश्यक फोगिंग की व्यवस्था, साफ-सफाई और मच्छर के लार्वा को नष्ट करने की व्यवस्था और इसके साथ आमजन में अवेयरनेस को गंभीरता से लिया ही नहीं जाता। मच्छर जनित बीमारी का फैलाव कब होगा इसके लिए पूर्व तैयारी हमारी होती ही नहीं। जब अस्पतालों में मरीजों की भीड होने लगती है तब हमारी जागने की प्रवृति है। नहीं तो अवेयरनेस कार्यक्रम तो पहले से ही चलाया जा सकता है। ऐसे में सरकारों को अभी से प्रिकोसनरी रणनीति बना लेनी चाहिए ताकि इसके असर को कम किया जा सके। लोगों को भी अपने घर से ही सुरक्षा उपायों पर ध्यान देना होगा। खासतौर से पुराने कबाड, कूलरों व अन्य पानी जमा भले ही नाममात्र का ही जमा नहीं होने दे। इसी तरह से शरीर को ढंकने वाले कपडे जैसे पूरी बाहों के शर्ट, पेंट आदि पहने और इसके साथ ही मच्छर नाशकों का उपयोग कर मच्छरों के प्रकोप से बचने और मच्छरों को फैलने से रोके। इस तरह के सुरक्षा मानकों की पालना करनी ही होगीं। नहीं तो जिस तरह से मानसून के पहले आने और अच्छी बरसात से जो लाभ हो रहा है वह मच्छरों के प्रकोप के फैलने से मच्छर जनित बीमारियों के फैलने का कारण भी बन जाएगा। मच्छर जनित बीमारियों की आपदा सामने हैं। अब आम नागरिकों से लेकर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग और स्थानीय निकायों को अपने-अपने दायित्वों को पूरा करने में जुट जाना होगा ताकि किसी को भी व्यवस्थाओं को लेकर कुछ सुनने का अवसर ही ना मिल सकें व बीमारों को समय पर स्वास्थ्य सुविधां प्राप्त हो सकें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

जीएसटी 2.0 कर सुधार का नया अध्याय

मदन राठौड़

देश की अर्थव्यवस्था में सुधार और पारदर्शिता की दिशा में 1 जुलाई 2017 को लागू हुआ वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) एक ऐतिहासिक कदम था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 101वें संविधान संशोधन के माध्यम से लागू हुई यह कर प्रणाली केवल तकनीकी बदलाव नहीं थी, बल्कि एक गहरी सोच के साथ लिया गया निर्णय था जिसने देश को 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' की अवधारणा से जोडा। लंबे समय तक भारत में कर ढांचा जटिल और बोझिल रहा। कांग्रेस सरकारों के दौर में कभी साइकिल पर 17 प्रतिशत, सिलाई मशीन पर 16 प्रतिशत, सीमेंट पर 29 प्रतिशत और दवाओं व कृषि उपकरणों पर 12 से 14 प्रतिशत तक कर वसूला जाता था। राज्यों की अलग-अलग कर प्रणालियों ने आम उपभोक्ता, व्यापारी और उद्योग जगत को उलझन में डाल रखा था। उस समय की नीतियां जनता को राहत देने के बजाय उल्टा उनके बोझ को बढाने वाली थीं।

मोदी सरकार ने इस अव्यवस्था को दूर करने का बीडा उठाया और जीएसटी लागू कर एक सरल, पारदर्शी और नागरिक हितैषी कर व्यवस्था दी। विशेषकर गरीब और मध्यम वर्ग के लिए राहत देने के उद्देश्य से जीवन रक्षक दवाओं, स्वास्थ्य बीमा और अन्य आवश्यक वस्तुओं को टैक्स मुक्त या न्यूनतम श्रेणी में रखा गया। यह निर्णय केवल आर्थिक सुधार नहीं बल्कि सामाजिक न्याय की दिशा में भी एक बडा कदम था।

अब एक नई ऐतिहासिक पहल के तहत 56वीं जीएसटी परिषद की बैठक में सर्वसम्मति से जीएसटी 2.0 लागू करने का निर्णय लिया गया है। 22 सितंबर 2025 से पूरे देश में केवल दो टैक्स स्लैब 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत लागू होंगे। इस निर्णय से कर प्रणाली और अधिक सरल होगी तथा आम जनता को सीधा लाभ मिलेगा। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में कमी आएगी, घर बनाने की लागत घटेगी, ग्रेनाइट और मार्बल जैसी निर्माण सामग्री सस्ती होगी और रियल एस्टेट सेक्टर को नई गति मिलेगी। किसान, छात्र, युवा, महिलाएं और छोटे व्यापारी वर्ग सभी को इसका लाभ मिलेगा।

जीएसटी 2.0 के प्रभाव दूरगामी होंगे। मांग में वृद्धि होगी, उद्योगों को प्रतिस्पर्धा में मजबूती मिलेगी और निवेश व रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। छोटे और मध्यम व्यापारियों को कर अनुपालन में आसानी होगी और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' को नई दिशा मिलेगी। भारत की विकास दर पहले से ही 8 प्रतिशत के आसपास रहने का अनुमान है और इस सुधार से घरेलू मांग और अधिक प्रबल होगी। यह निर्णय केवल कर सुधार नहीं बल्कि देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता हुआ एक निर्णायक कदम है।

त्योहारी सीजन से ठीक पहले लिया गया यह फैसला प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि और जनता के प्रति उनकी संवेदनशीलता का प्रतीक है। जहां कांठोस ने दशकों तक करों की भूलभुलैया बनाकर जनता को परेशान किया, वहीं भाजपा सरकार ने सरलता और पारदर्शिता को आधार बनाकर नागरिकों को राहत दी। यही अंतर खोखले वादों और ठोस फैसलों में दिखाई देता है। जीएसटी 2.0 केवल संख्याओं का फेरबदल नहीं, बल्कि भारत के आर्थिक इतिहास का वह अध्याय है जो आने वाले समय में देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खडा करने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

–मदन राठौड़,
भाजपा प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में बसता, भारत का जन मन और जनजातियां

डॉ. निमिषा गौड़

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि, अथार्थ

हे मातृभूमि आपको हर समय नमस्कार है, आप प्रेम करने वाली है। देशभक्ति और मातृभूमि की श्रद्धा से प्रेरित संघ की प्रार्थना को हाल ही में दक्षिण भारत के कांग्रेसी नेता व कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री ने राज्य की विधानसभा में गाकर दक्षिण भारतवासियों की संघ निष्ठा का पुन: स्मरण करवाया, यद्यपि राजनीतिक दबाव के चलते डी के शिवकुमार ने क्षमा माँग ली। किंतु एक वो भी समय था जब मध्य बरार के कांग्रेसी मुख्यमंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल ने क्षेत्र मे जाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शरण ली थी।

स्वतंत्रता के पश्चात मध्य प्रदेश के विकास की योजना बनाने के लिए दौरे पर निकले मुख्यमंत्री प. शुक्ल को जशपुर के जंगलों से 'शुक्ला गो बैक' के नारों और काले झंडों का सामना करना पडा तब जनजातियों के मध्य विदेशी शासकों की नीतियों से पनपे जहर का सामना कांग्रेसी नेता ने किया। तब अपमान और खिन्नता से भरे मुख्यमंत्री ने जनजातियों के मध्य राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित सामाजिक कार्यों और शिक्षा की आवश्यकता महसूस किया।

इसके लिए पिछडी जाति कल्याण विभाग बनाया। इस विभाग की सार संभाल के लिए क्षेत्रीय संगठक के पद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बाला साहब देशपाण्डे जी को जिम्मेदारी दी ।कांग्रेसी नेता को भी विश्वास था कि जनजातियों के मध्य समरसता का भाव लाने का मादा राष्ट्र का निष्ठावान सेवक ही कर सकता है।

वर्ष 1926 में बाला साहब देशपाण्डे संघ की शाखा में जाने के कारण पूजनीय डॉक्टर हेडगेवार के संपर्क में आए। वे संघ के प्रारंभिक कार्यकर्ताओं में से एक थे और उन्होंने संघ के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने मध्य भारत, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर भारत के दूरदराज क्षेत्रों में वर्ष 1952 से वनवासी कल्याण आश्रम का सहरानीय कार्य किया। वनवासी कल्याण आश्रम का ध्येय वाक्य में नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी हम सभी हैं भारतवासी।

वर्ष 1925 से ही एक संगठित और सामर्थ्यवान हिन्दू समाज के निर्माण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनथक रूप में 'हिंदू सोदरा सर्वे' के भाव से साधना कर रहा था, इसी साधना में जनजातीय समाज के स्वाभिमान और संस्कृति को अपने कार्य में अग्रणी रखते हुए संघ की प्रेरणा से वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य प्रारंभ हुआ, जो कालांतर में पूरे देश में विस्तृत हुआ।

भारतीय संस्कृति के मूल स्वरुप में अखंड भारत की संकल्पना थी, किंतु विदेशी साम्राज्य के हजारों वर्षों के आधिपत्य ने देश का विभाजित करते हुए अनेक जातियों में बांट दिया और जनजाति समाज के मन में हीन भावना भरकर उन्हें अपनी मूल संस्कृति से अलग करने का कुटिल प्रयास भी किया।

वर्ष 1954, नियोग समिति की रिपोर्ट में मतांतरण को कानून द्वारा प्रतिबंधित करने की सिफारिश की गई थी। किंतु समिति के खोजपूर्ण दस्तावेजों को भी दरकिनार करके तत्कालीन सरकार हिन्दू समाज की बेरुखी कर रही थी जिसके परिणामस्वरूप जात पात का भेदभाव जनमानस के बीच व्याप्त हो गया था। तत्पश्चात हिन्दू समाज को संगठित करने का बीडा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उठाया और आज तक हिन्दू समाज को संगठित करने का तप लाखों स्वयंसेवक कर रहे हैं।

संघ के मूल भाव में जनजाति, अनुसूचित जाति, स्वर्ण, अगड़ा-पिछड़ा और आदिवासी सभी भारत के मूल निवासी है। इनमें भेद करने वाले विचारों का संघ प्रतिकार करता है।

ऐतिहासिक पन्नों को पलटने पर ज्ञात होता है कि भारत की जनजातियों की अपनी संस्कृति और सभ्यता रही है। पहाडियों कटीली झाडियों में रहने वालों ने अपने जीने के अधिकार के लिए कई लडाईयां लडी। स्वाभिमान और संस्कृति के संरक्षण के लिए अपने जीवन की आहूति देने में पीछे नहीं रहे। जिसमें से तिलका भीम, भीमा नायक रामा हब्शी, नंत राम देगी, राणा पूंजा, बिरसा मुंडा, गुण्डाधुर गोविंद गुरु जैसे अनेक नायकों ने जनजातियों को नेतृत्व देकर देश समाज की रक्षा का संदेश दिया। रानी दुर्गावती, रानी गाईदिल्यु, नूरा और सेला, काली बाई जैसी नायिकाओं ने भी जनजातीय समाजों को दिशा प्रदान की है। भारत के मध्य काल में जातियों के मध्य विभाजन की दरार के पश्चात स्वतंत्र भारत में धर्मांतरण की समस्या से जूझ रही जन जातियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की महती भूमिका है।

संघ का प्रयास यह है कि जनजातीय समाज में से ही जागरूक नेतृत्व खडा हो जो उनके हितों की रक्षा करें और राष्ट्र निर्माण में अग्रणी बने। इसलिए सबसे पहले संघ ने जनजातीय समाज को सशक्त बनाने के लिए सेवा भाव को अपनाया, उनमें स्वत्व और स्वाभिमान को जगाने का प्रयास किया। समाज के नायकों द्वारा संपूर्ण देश के लिए किए गए प्रयासों को पूरे देश के सामने लाकर उन्हें राष्ट्र नायक के रूप में अपनी पहचान दिलाने का कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा है। संघ विचारों से प्रेरित होकर वनवासी कल्याण परिषद के कार्यकर्ता जनजातीय समाज के बीच में रहकर उनके रीति-रिवाजों, कला संस्कृति और वेशभूषा के संरक्षण के लिए निरंतर साधनारत है।

जनजातियों के मध्य मतांतरण के विरोध के फलस्वरूप अनेक स्वयंसेवकों और संतों ने अपने जीवन की आहुति तक दी। उडीसा के स्वामी लक्ष्मणानंद इसका उदाहरण हैं असम में 2005 में उल्फा के आतंकियों ने स्थानीय समाज के लिए कार्य कर रहे संघ के कार्यकर्ता शुक्लेश्वर मेढी की हत्या कर दी। वर्ष 2001 में त्रिपुरा में एनएलएफटी के लोगों ने संघ कार्य को मतांतरण करने में बाधा समझकर संघ के अनेक प्रचारकों का अपहरण कर यातनाएं दी लेकिन संघ प्रतिबंध दबाव से परे मातृभूमि की सेवा के लिए अनवरत सेवारत रहा है।

जनजाति समाज की सुरक्षा और संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दलित पिछडे और आदिवासी वर्गों के मध्य सामाजिक समरसता के अभियान भी चलाता रहता है। जैसे एक कुआँ एक मंदिर एक श्मशान जैसे अभियान चलाए गए ताकि दलितों को समान धार्मिक-सामाजिक अधिकार मिलें। संघ की शाखाओं में जाति की पूछताछ नहीं की जाती, सभी भाई कहलाते है। जाति समरसता की नींव संघ की शाखा से शुरू होकर स्वयंसेवक के गृहस्थ जीवन तक समानता के भाव रहते हैं।

आज भारत में सात सौ से अधिक जन जातियां हैं। इनमें 75 जन जातियां अति पिछडी जनजातियां है। महाराष्ट्र में कातकारी जनजाति विकास से कोसों दूर थी। वनवासी कल्याण आश्रम के सहयोग से रायगढ के मानगांव विद्यालय में कातकारी समाज की पहली शिक्षित पीढी का निर्माण हुआ है। अब इस विद्यालय में कातकारी के साथ ठाकुर जनजाति के भी 450 छात्र छात्राएं पढ रहे है।

तू-मैं एक रक्त के भाव से बाला साहब देशपाण्डे के नेतृत्व में जनजाति समाज के बीच कार्य शुरु हुआ था। आज जनजाति समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए कल्याण आश्रम काम कर रहा है। आश्रम देश के 64 हजार 814 गांवों में विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से लाखों जनजातीय वर्ग के बंधु-भगिनी लाभान्वित हो चुके हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिन्दू परिषद और सेवा भारती अनेक प्रकल्पों के माध्यम से भारत के प्रत्येक प्रांत में निवासरत जनजाति समाज के लिए चिकित्सा, शिक्षा, सुरक्षा, स्वावलंबन और समरसता के साथ-साथ स्वधर्म के जागरण का कार्य कर रहे हैं। एकल विद्यालयों के माध्यम से ये संगठन भारत और भारतीयता की शिक्षा का कार्य एवं प्रचार प्रसार जनजातीय समाज में कर रहे हैं। सूदूर पूर्वोत्तर इलाकों में संघ की शाखाएं स्व, स्वधर्म और समरसता का मंत्र लेकर अनेक स्वयंसेवक, कार्यकर्ता आत्मीय भाव से हिन्दू समाज को एकता के सूत्र में बांध रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की साधना के शताब्दी वर्ष तक अनेक परिवर्तन हुए लेकिन हिन्दू समाज में स्वत्व का भाव संघ का ध्येय है, यह कार्य सतत चल रहा है।

विविधता में एकता से समाज को संगठित करने तथा पूर्वोत्तर के मैंतई और कूकी समाज के बीच फैली भ्रांतियों को दूर करने के लिए संघ के अनेक कार्यकर्ता बंधुभाव से सदभाव बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में इसे मुख्य एजेंडे में शामिल करते हुए ''संवाद के जरिए समाधान'' का प्रस्ताव पास किया। जनजातीय समाज के नेताओं को संघ के कार्यक्रमों में मुख्यातिथि के रूप में सम्मान देना संघ का सहृदय बंधु भाव को दर्शाता है। संघ शताब्दी वर्ष पर पंच परिवर्तन के सूत्रों को आत्मसात कर देश में समरस समाज का संदेश देता है। संघ कार्य का आधार सत्य और प्रेम है।

संघ प्रमुख श्रीमान मोहन भागवत कहते हैं कि शमशान, मंदिर और पानी सब हिन्दुओं के लिए एक होना चाहिए हिंदू समाज के सभी पंथ ,जाति, समुदाय साथ आएं,यही संघ की परिकल्पना है, हमारा उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना है।

'न हिंदू पतितो भवेत' के भाव से सृष्टि की सत्ता के अधीन सबके कल्याण में ही स्वयंसेवक का सुख है। इस भाव से बना समरस समाज ही संघ का मूल मंत्र है जिसमें जनजातीय समाज हिन्दू समाज का अभिन्न अंग है।

–डॉ. निमिषा गौड़,
सहायक आचार्य,
कनोड़िया पी. जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर।

राशिफल शनिवार 6 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 10:56 तक, अतिगंड योग दिन 11:52 तक, गर करण दिन 2:28 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:21 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 10:56 तक है। भद्रा रात्रि 1:42 से आरम्भ होगा। आज अनन्त चतुदर्शी व्रत, पंचक दिन 11:21 से आरम्भ होगा। आज भागवत सप्ताह पूर्ण होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:45 से 9:19 तक, चर 12:25 से 1:59 तक, लाभ-अमृत 1:59 से 4:59 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:39

मेष

व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह

व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक समस्या हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ

परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

कर्क

परिवार में आपसी समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

2 लाख एलईडी स्ट्रीट लाइट से राजस्थान की हर गली-हर सड़क होगी जगमग

त्योहारी सीज़न से पहले सीएम की अहम घोषणा

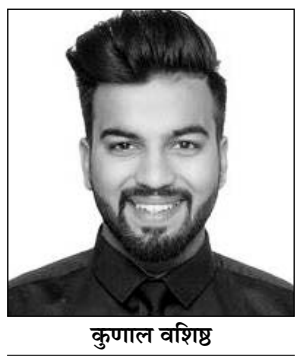

कुणाल वशिष्ठ

राज्य सरकार की ओर से राज्यवासियों के लिए बड़ी सौगात दी गई है। रविवार को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नगरीय क्षेत्रों की रात्रिकालीन सुरक्षा, ऊर्जा बचत और बेहतर यातायात व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए बजट 2025-26 में प्रस्तावित 1 लाख एलईडी स्ट्रीट लाइटों की संख्या बढ़ाकर अब 2 लाख करने का अहम निर्णय लिया है।

श्री शर्मा ने कहा कि हमारा संकल्प है कि प्रदेश की हर सडक, हर मोहल्ला और हर बाजार रोशनी से जगमगाए। यह केवल रोशनी का कार्य नहीं बल्कि सुरक्षित और आधुनिक राजस्थान के निर्माण की दिशा में एक ठोस कदम है। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि त्योहारी सीज़न को देखते हुए इस कार्य की शुरुआत दीपावली से पूर्व की जाए ताकि प्रदेश की सडकें और भी सुंदर दिखाई दें।

स्वायत्त शासन विभाग के सचिव श्री रवि जैन ने बताया कि राज्य की 312 नगरीय निकायों में बढ़ती आबादी और क्षेत्रीय विस्तार को देखते हुए आधुनिक प्रकाश व्यवस्था अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के विज़न के अनुरूप पुरानी और कमज़ोर लाइटों को हटाकर नई एलईडी लाइटें लगाई जाएंगी। श्री जैन कहा कि यह निर्णय न केवल शहरों की सूरत बदलेगा बल्कि नागरिकों के जीवन में सुरक्षा और सहजता का भाव भी जोड़ेगा। यह पहल ऊर्जा की बचत करेगी, दुर्घटनाओं में कमी लाएगी और लोगों को रात के समय भी सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराएगी। मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार विभाग अतिशीघ्र प्रभावी कार्ययोजना तैयार कर इस कार्य को शुरू करेगा।

उल्लेखनीय है की स्वायत्त शासन विभाग द्वारा शहर चलो अभियान के तहत 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक राज्य की सभी नगरीय निकायों में नई स्ट्रीट लाइट लगाने और बंद लाइट को चालू करने का कार्य भी किया जाएगा । इसी के साथ ही स्वायत्त शासन विभाग द्वारा नगरीय निकायों में आमजन की स्ट्रीट लाइट, पेयजल, सडक से संबंधित शिकायतों और सुझाव के लिए राज्य स्तरीय हेल्पलाइन नंबर 181 भी जारी किया गया है ।

–कुणाल वशिष्ठ,
एपीआरओ, स्वायत्त शासन विभाग, राजस्थान

सीनियर नर्सिंग ऑफिसर गुप्ता सम्मानित

भरतपुर (निस)। राजस्थान राज्य नर्सेज एसोसिएशन के तत्वाधान में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि प्रान्तीय उपाध्यक्ष चन्द्रशेखर लवानियां एवं अध्यक्षता जिलाध्यक्ष कालीचरण तराना ने सीनियर नर्सिंग ऑफिसर ''चन्द्रप्रकाश गुप्ता को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'' से सम्मानित किया।

भूतपूर्व नर्सिंग अधीक्षक दीवान सिंह ने चन्द्रप्रकाश गुप्ता के सराहनीय कार्यों की प्रशंसा करते हुए उनके योगदान को याद किया। कार्यक्रम में नर्सिंग अधीक्षक लोकेश सिंघल, विष्णु गुप्ता, अभय प्रताप, प्रियांका देवी, प्रीति सिंह, दिलीप गुप्ता, विजय शर्मा, तरूण सिंघल, योगेश गर्ग, मनोज सिंघल एवं अम्बेश गोयल उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन ''लोकेश सिंघल'' ने किया तथा आभार ''विष्णु गुप्ता'' ने व्यक्त किया।